यहाँ आकर हमें सुकून मिलता है - रविन्द्र गुप्ता

दिल्ली-पाण्डव भवन। बाहर के नेगेटिव वातावरण से निकल कर यहां आने के पश्चात् मैंने यहाँ की पॉज़ीटिव एनर्जी का अनुभव किया है और ऐसी पॉज़ीटीविटी की केवल एक-दो को नहीं बल्कि पूरी दुनिया को आवश्यकता है। उक्त विचार महापौर रविन्द्र गुप्ता ने राजयोगिनी दादी ऑलराउण्डर के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि हमें जितना भी समय मिले उतना ही समय यहाँ बिताना चाहिए और ऐसे पवित्र और सुखद वातावरण का लाभ और आनंद लेना चाहिए।

कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. चक्रधारी व ब्र.कु. पुष्पा ने सभी के साथ अपने ऑलराउण्डर दादी के साथ के अनुभव साझा किए व उनके जीवन चरित्रों पर प्रकाश डाला।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि पूर्वज जो करते हैं उसका फल आने वाली पीढ़ी को मिलता ही है। हमें सम्पूर्ण विश्व को बदलना है, ऐसे में हमारा जीवन औरों के लिए विधान हो। हमारा जीवन अनुकरणीय व दूसरों के लिए आदर्श पथप्रदर्शक बन जाए। उन्होंने कहा कि दादी ऑलराउण्डर ने हर परिस्थिति में अचल-अडोल रहकर ईश्वरीय सेवा की। उनका कल हमें आज मिल रहा है। हमें भी आगंतुकों पर विशेष मेहनत कर उन्हें योग्य बनाना होगा। बाबा की जो आशाएं हैं उन्हें पूर्ण करना ही हमारा लक्ष्य हो।

कार्यक्रम के अंत में सभी भाई बहनों को दादी ने पावरफुल दृष्टि दी व ब्र.कु. चक्रधारी ने सभी को प्रसाद दिया।

कोटा-सुरपुर(राज.)। डिस्ट्रीक्ट कलेक्टर रवि कुमार को दीपावली की शुभ कामनाएं देते हुए ब्र.कु. ज्योति।

कोटद्वार-उत्तराखण्ड। दीपावली के शुभ अवसर पर गरीब बच्चों व उनके परिवारों को किताबें व मिठाइयाँ देते हुए ब्र.कु. ज्योति।

साधना के पथ पर

- ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

साधनामय जीवन बनाने का अर्थ है जीवन को चौमुखी विकसित करना। स्वयं बनाए हुए लक्ष्य को अर्जित करना। लक्ष्य-प्राप्ति के पथ पर आने वाली परिस्थितियों या कठिनाइयों पर कौशल और कला के द्वारा विजय हासिल करना ही साधना है। दूसरे शब्दों में कहें तो जीवन को आनंदमय बनाना।

जब व्यक्ति अपने विशेष लक्ष्य को लेकर अग्रसर होता है, उसे कई चुनौतियां स्वीकार करनी ही होती हैं। कई बार ऐसा समय भी देखना पड़ता है कि क्या करें? ऐसी असमझ जैसी स्थिति बन जाती है। ऐसे में हमें अपने आपमें विश्वास बनाए रखना बहुत ज़रूरी है। साधाना के मार्ग में दो शक्तियां विशेष रूप से काम करती हैं - पहला -ईश्वरीय शक्ति और दूसरा -स्वयं में विश्वास। जब गाड़ी को किसी ऊँची पहाड़ी पर ले जाना हो तो उसका ब्रेक, क्लच, स्टेयरिंग, ऑयल आदि चेक कर लेना होता है, ठीक उसी प्रकार हम जब आध्यात्मिक ऊँचाइयों की राह पर चल रहे हैं तो बीच-बीच में स्वयं की चेकिंग करना ही चाहिए। नहीं तो समय आने पर पता ही नहीं पड़ेगा कि हमारा पत्ता ही कट गया। स्वयं की जांच कर लक्ष्य और लक्षण के अंतर को कम करना - अपने लक्ष्य और लक्षण के अंतर को समाप्त करने के लिए सहज व श्रेष्ठ योजना बना लेनी चाहिए। उसके लिए पुरुषार्थ का मास्टर प्लान बनाते रहें। और सदा चेकिंग करें कि समयावधि पर उसे प्राप्त किया या नहीं? साथ-साथ उमंग-उत्साह व रुचि बनी रहे, उसका ध्यान रखा जाए। तब ही ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता मिलती है।

हम सभी साधना की राह पर आ पहुंचे हैं। अब समय रूपी पर्दा उठने वाला है। हमारी रिज़ल्ट आऊट होने ही वाली है। ऐसे में हमें तीव्र पुरूषार्थ कर अंतिम पड़ाव में सुस्ती, आलस्य और अलबेलेपन को लात मार उससे मुक्त होना होगा। जैसे फुटबॉल में बॉल को शक्ति से मार कर दूसरे छोर पर पहुंचा देते हैं ताकि विजय हो जाए।

बाबा ने कहा, अपने को उमंग-उत्साह में लाने के लिए बीच-बीच में पांच बार अपनी मन रूपी बैटरी को ऊर्जावान बनाना ही होगा ताकि समय पर काम आए। सदा अपने को देखें कि - मैं विजयी आत्मा हूँ। सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। इस कसौटी पर निरंतर चेकिंग बनी रहे।

बाबा ने सरल व सहज युक्ति बताई कि दुआएं दो -दुआएं लो -बस इसे हर पल सार्थक कर चलते चलें। कभी भी अपनी वृत्ति रूपी खान से ऐसा संकल्प न निकले जो दुआओं का पात्र न हो। वृत्ति को श्रेष्ठ व शुद्ध बनाये रखना ही मंज़िल को समीप लाना है। बाबा ने इसी संदर्भ में कहा कि तुम्हारा योग स्मृति स्वरूप हो। जो भी दुनिया में गायन वा स्मरण होता है वह तुम्हारा ही है। अब हे इष्टदेव! सबकी मनोकामना अपनी श्रेष्ठ स्मृति में स्थित होकर पूरी करो। स्वमान की स्मृति में रहना अपने आपमें खुशी से भरपूर करना है। खुशी होगी तो हमारे चेहरे-चलन से निरंतर प्रत्यक्ष दिखाई देगी ही। इस तरह हमारी खुशी से सदा सेवा होती रहेगी। साधना की राह में खुशी बनाए रखना बहुत ज़रूरी है। बाबा के महावाक्य हैं तुम चलते-फिरते म्युज़ियम हो। अटेंशन रहे। आप विधि-विधान बनाने वाले हो। तुम्हारी हर चाल-चलन से सारे कल्प के विधि विधान निर्मित होंगे इसलिए बड़ी ज़िम्मेदारी से जीवन को संवारते चलना है।

स्वयं बाबा हमारे जीवन रूपी रथ के सारथी हैं। विजय हमारी ही है। इसी स्मृति में रहेंगे तो कभी माया मुर्छित नहीं कर सकेगी।

अब हमें बाबा ने कार्य दिया है वायुमण्डल के किले को मजबूत करने का। कोई भी दिखाई देने वाली वस्तु या आने वाली परिस्थितियों के प्रभाव हमारी स्थिति को विचलित न करें। हमारी वृत्ति में शुद्ध व श्रेष्ठ संकल्पों का स्टॉक इतना जमा हो जो खराबी जाने की जगह ही न बचे।

आज से हम पन्द्रह दिन की प्लानिंग कर लें कि हमें दुआएं लेना है दुआएं देना है। आजकल वर्ल्ड कप में विजय के लिए भी कई जगह दुआएं लेते हैं। हमें तो सारे विश्व को बीमारी से मुक्त करना है, ऐसी दुआएं करनी हैं। सारे दिन में कहीं बद्दुआ रूपी दाग न लग गया हो, रात्रि को चेककर उसे चेंज करें। बस अगर हम पन्द्रह दिन इसमें कामयाब हो जाते हैं तो हमारी सदा की नेचर बन जाएगी। बाबा की मदद है। बस ऐसी साधना करें...अपने आपको खुशनुमा तरोताज़ा बनाएं। परमात्म साथ का आनंद लेते कमज़ोरी को नष्ट करते चलें। बाबा की आशाओं के दीपक बन आगे बढ़ें। और उसे पाकर सफल बन जाएं। जीवन में ईश्वर के डायरेक्शन पर चलने का सुख उठाएं। साधना, हमारी साधना ही नहीं लेकिन जीवन ही साधनामय बन जाए।

नैनीताल। सैनिक स्कूल में कार्यक्रम के पश्चात् ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. स्वामीनाथन, प्रिन्सीपल रोहित द्रवेविदी, ब्र.कु. वीणा, कर्नल बी.सी.सती व फैकल्टी मेम्बर्स।

चित्तौड़गढ़-निम्बाहेड़ा। दीप महोत्सव के अवसर पर सेवाकेन्द्र पर दीप प्रज्वलित करते हुए बी.जे.पी. पार्षद वर्षा कृपलानी। साथ हैं ब्र.कु. शिवाली।

रादौर-कुरूक्षेत्र। दीपावली पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में सरपंच विनोद शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राज बहन। साथ हैं ब्र.कु. राजू व अन्य।

सुनाम-पंजाब। ब्र.कु. मीरा व ब्र.कु. दीप्ति ने विश्वकर्मा दिवस पर विश्वकर्मा भवन में जाकर सभी को बधाई दी। उसके पश्चात् प्रधान व सभी मेम्बर्स ने बहनों को सरोपा भेंट कर सम्मानित किया।